इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 13 अगस्त 2026

धन-समृद्धि से युक्त बड़े-बड़े राज्यों के राजा-महाराजों की तुलना भी उस चींटी से नहीं की जा सकती है जिसमें ईश्वर का प्रेम भरा हो।
-गुरुनानक देव

वर्ष 18 अंक 342 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

तापमान - अधिकतम 36.9°C (+3.4) न्यूनतम 27.4°C(+1.6) सेंसेक्स 78,966.35 (-187.90) निफ्टी 24,435.95 (-035.75) सोना 1,55,010 चांदी 2,55,000 मुद्रा - डालर 95.38 दिरहम 25.97 रियाल 25.43

युवाओं में भी तेजी से बढ़ रहा है गैर संचारी रोग : प्रो. अशरफ गनी

- एरा विश्वविद्यालय में हुआ एनसीडीएस पर मंथन
- कई विशेषज्ञों ने रखी अपनी बात

लखनऊ (ब्यूरो)। एरा विश्वविद्यालय में बुधवार को भारत में गैर संचारी रोगों (एनसीडीएस) के बढ़ते प्रकोप पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्रीनगर स्थित शेर-ए कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक प्रोफेसर मोहम्मद अशरफ गनी ने कहा कि भारत में मोटापे, मधुमेह और अन्य मेटाबोलिक विकारों के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। ये परिस्थितियां अब परिवारों को प्रभावित कर रही है। लगभग हर पांचवें घर में कोई न कोई व्यक्ति मोटापे या अधिक वजन की समस्या से जूझ रहा है। एनसीडीएस अब केवल अधिक उम्र के लोगों तक सीमित नहीं है। यह भारतीय युवाओं में भी तेजी से फैल रहा है। इसलिए इनकी रोकथाम, शुरुआती पहचान और जीवनशैली में बदलाव महत्वपूर्ण हो गए हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी बदलती जीवनशैली इस तरह की महामारी को बढ़ावा दे रही हैं। इस दौरान उन्होंने लीन नॉन अल्कोहलिक स्टीटोहेपेटाइटिस, पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम, इंसुलिन रेजिस्टेंस सिंड्रोम और एंडोक्राइन.डिसरप्टिंग केमिकल्स को प्रभावित करने वाले रसायन पर विस्तार से बात की। उन्होंने मेटाबोलिक गड़बड़ी और गैर संचारी रोगों के व्यापक दायरे के साथ इनके संबंधों को समझाया। उन्होंने उन लोगों में भी मेटाबोलिक बीमारी की पहचान करने के महत्व पर ज़ोर दिया, जिनमें पारंपरिक मोटापा या अन्य स्पष्ट शारीरिक जोखिम कारक नहीं हो सकते हैं।

इस सत्र का मुख्य फोकस इंसुलिन रेजिस्टेंस की अवधारणा पर था, जो मधुमेह, फैटी लिवर रोग, मोटापा और कई अन्य कार्डियो-मेटाबोलिक स्थितियों को जोड़ने वाली एक सामान्य मेटाबोलिक कड़ी है। मेटाबोलिक और हार्मोनल गड़बड़ी में योगदान देने वाले नए कारकों के रूप में पर्यावरणीय प्रभावों और एंडोक्राइन डिसरप्टर्स की भूमिका पर भी चर्चा की गई। इस अवसर पर एरा यूनिवर्सिटी के फैकल्टी ऑफ मेडिसिन के डीन एमेरिटस, डॉ. एमएमए फरीदी ने एनसीडीएस के तेज़ी से बढ़ते बोझ से निपटने के लिए अधिक जागरूकता, रोकथाम की रणनीतियों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। एराज़ लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के प्रधानाचार्य डाक्टर जमाल मसूद ने मेडिकल छात्रों और चिकित्सकों को सार्वजनिक स्वास्थ्य की उभरती चुनौतियों के प्रति संवेदनशील बनाने का अह्वान किया। उन्होंने कहा कि क्लिनिकल देखभाल में बदलाव के लिए इस तरह की शैक्षणिक बातचीत आवश्यक है। एनसीडीएस महामारी को केवल अलग.अलग बीमारियों के समूह के रूप में नहीं बल्कि कई कारकों वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसके लिए शुरुआती हस्तक्षेप, जीवनशैली में बदलाव, मेटाबोलिक जोखिम का आकलन और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के बीच समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है। भारतीय स्वास्थ्य सेवा परिवेश में आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणाओं को उनकी व्यावहारिक प्रासंगिकता के साथ जोड़ने के लिए इस सत्र की व्यापक रूप से सराहना की गई। एरा मेडिकल कालेज के मेडिसिन विभाग के प्रमुख प्रो वैभव शुक्ला ने कार्यक्रम का संचालन किया और मुख्य मुख्य वक्ता का परिचय दिया। इसके अलावा उन्होंने आज की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के लिए एक बड़ी चुनौती बताते हुए गैर.संचारी रोगों के बढ़ते खतरे पर प्रकाश डाला।